* श्रीहरिः *

श्रीभगवत्-पद-कर-युगल चिह्न

उपासकों की निधि

श्री हरिनाम प्रकाशन

वृन्दावन

न्यो० २) रु०

दो शब्द

सच्चिदानन्दघन निखिलैश्वर्य - माधुर्यमूर्त्ति परब्रह्म स्वयं भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण ही उपास्य तत्व, भजनीय तत्व हैं। उसमें भी उनकी परम प्रियतमा व्रजगोपिकाओं का स्पष्ट कथन है कि—

आहुश्च ते नलिननाभ पदारविन्दं योगेश्वरैर्हृदि विचिन्त्यम गाधबोधैः ।
संसारकूप-पतितोत्तरणावलम्बं गेहञ्जुषामपि मनस्युदियात् सदा नः ।।

श्रीमद्भागवत १ –८२–४९

हे कमलनाभ ! अगाध ज्ञान-सम्पन्न बड़े-बड़े योगीजन जिनका अपने हृदय में ध्यान-चिन्तन करते रहते हैं और संसार-कूप में गिरे हुए लोगों के लिए उस गर्त्त से निकलने का जो एकमात्र अवलम्बन हैं, वही आपके चरण-कमल हम गृहस्थियों के हृदय में सदा-सदा आविर्भूत हों—यही हमारी प्रार्थना है।

अतः व्रज की रागानुगीय उपासना के साधकों के लिए एकमात्र भगवत् चरण-कमल ही भजनीय, सेवनीय एवं चिन्तनीय हैं।

छोटी सी किन्तु उपासकों के लिए महानिधिस्वरूपा इस पुस्तिका में श्रीप्रिया-प्रीतम श्रीराधा-कृष्ण के युगलचरण-कर चिह्नों का सचित्र वर्णन किया गया है। व्रज-लीला की परिशिष्ट रूप नवद्वीप-लीला के श्रीकृष्ण-स्वरूप श्रीमन्महाप्रभु गौराङ्गदेव तथा तदभिन्न श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु और महाविष्णुस्वरूप श्रीमदद्वैत प्रभु के युगल चरण-कर कमल चिह्नों का भी इसमें समावेश है।

इस प्रकार सपरिकर श्रीमन्महाप्रभु के युगल कर-चरण-चिन्तन के साथ-साथ श्रीप्रिया-प्रियतम के युगल कर-चरण-चिन्तन का चित्रों सहित परम सुयोग इसमें जुटाया गया है जो युगल लीला-चिन्तन की पूर्णता विधान करता है।

श्रीजीवगोस्वामिचरण द्वारा पद्मपुराण से संग्रह श्रीगोविन्दलीलामृत, श्रीरूपचिन्तामणि तथा आनन्दचन्द्रिका आदि ग्रन्थों के आधार पर इसका सम्पादन हुआ है।

आशा है भगवत् चरणोपासक इससे यथेष्ट लभान्वित होंगे।

वैष्णवपदरजाभिलाषी—
श्यामलाल हकीम

सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
१—	श्रीश्रीगौरचन्द्र चरण-चिह्न	१
२—	,, करयुगल-चिह्न	३
३—	,, करयुगल-ध्यान	४
४—	श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु चरण-चिह्न	७
५—	,, पद-चिह्न धारण-क्रम	७
६—	,, करयुगल-चिह्न	८
७—	,, कर-चिह्न-धारण-क्रम	९
८—	श्रील अद्वैत प्रभु चरण-चिह्न	११
९—	,, धारण-क्रम	११
१०—	,, करयुगल-चिह्न	१२
११—	,, धारण-क्रम	१२
१२—	श्रीकृष्ण चरण-चिह्न	१३
१३—	,, धारण-क्रम	१४
१४—	,, धारण-प्रयोजन	१४
१५—	,, करयुगल ध्यान-क्रम	१७
१६—	श्रीराधिका चरण-चिह्न	१९
१७—	,, धारण-क्रम	२०
१८—	,, करयुगल-ध्यान	२१
१९—	,, धारण-क्रम	२२

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न

श्रीगौराङ्ग-श्रीपदयुगल चिह्न

* श्रीगौराङ्गविधुर्जयति *

श्रीभगवद-श्रीपद-कर-युगल चिह्न

●

श्रीश्रीगौरचन्द्र-चरण-चिह्न

श्रीश्रीमन्महाप्रभु श्रीगौरचन्द्र के चरण - चिह्नों का इस प्रकार स्मरण करना चाहिये—

यवमङ्गुष्ठमूले च तत्तले चातपत्रकम् ।
अंगुष्ठ तर्जनी - सन्धिभागस्थामूर्ध्वरेखिकाम् ।
सुकुञ्चितां सूक्ष्मरूपां स्मर रे मे मनः सदा ॥१॥

श्रीमन्महाप्रभु श्रीगौराङ्ग के **दाहिने-चरण** के अंगूठे के मूल में (१) जौ तथा उसके नीचे (२) छाता है। अंगूठे और तर्जनी के सन्धि-स्थान में (३) रेखा है जो सूक्ष्म रूप से संकुचित होती हुई नीचे को चली गई है, रे मन ! सदा इन चिह्नों का स्मरण कर ॥१॥

तर्जन्यास्तु तले दण्डं वारिजं मध्यमातले ।
तत्तले पर्वताकारं तत्तले च रथं स्मर ॥२॥

रथस्थ दक्षिणे पार्श्वे गदां वामे च शक्तिकाम् ।
कनिष्ठायास्तलेऽङ्कुशं तत्तले कुलिशं स्मर ॥३॥

तर्जनी के नीचे (४) दण्ड है और मध्यमा के नीचे (५) कमल है। उसके नीचे (६) पर्वत तथा उसके नीचे (७) रथ का स्मरण कर। रथ की दक्षिण ओर में (८) गदा है और वाम ओर में (९) शक्ति है। कनिष्ठा के नीचे (१०) अंकुश और उसके नीचे (११) वज्र का स्मरण करना चाहिये ॥२—३॥

वेदिकां तत्तले व्याप्तां तत्तले कुण्डलं ततः ।
एतच्चिह्नतले दीप्तं स्वस्तिकानां चतुष्टयम् ॥४॥

अष्टकोण समायुक्तम् सन्धौ जम्बू-चतुष्टयम् ।
'असव्याङ्घ्रौ' महालक्ष्म स्मर गौरहरेर्मनः ॥५॥

वज्र के नीचे (१२) वेदी, उसके नीचे (१३) कुण्डल है। इन समस्त चिह्नों के नीचे (१४) चार स्वस्तिक प्रकाशित हो रहे हैं। बीच में (१५)

अष्टकोण है तथा अष्टकोण के चारों कोनों पर (१६) चार जामन - फल मिलते हुए सुशोभित हैं—इस प्रकार श्री गौरहरि के दाहिने चरण में १६ मङ्गलमय-चिह्नों का, हे मन ! स्मरण कर ॥४—५॥

अथ 'वामपदांगुष्ठ' मूले शङ्खं तलेऽप्यरिम् ।
मध्यमातल आकाशं तद्द्वयाधो धनुः स्मर ॥६॥
गुणेन रहितं चापं बलयां मणि - मूलके ।
कनिष्ठायास्तले चैकं सुशोभन - कमण्डलुम् ॥७॥

श्रीमन्महाप्रभु के **बायें चरण** के अँगूठे के मूल में (१) शङ्ख है तथा उसके नीचे (२) चक्र है । मध्यमा के नीचे (३) आकाश है, उसके नीचे (४) डोरीरहित धनुष है जो (५) मणिकङ्कण के नीचे अवस्थित है । कनिष्ठा के नीचे एक सुन्दर (६) कमण्डलु है । हे मन ! इनका स्मरण कर ॥६—७॥

तस्य तले गोष्पदाख्यं सत्पताकां ध्वजां पुनः ।
चिन्तय तत्तले पुष्पं वल्लीं तस्य तले स्मर ॥८॥
गोष्पदस्य तलेऽप्येकं त्रिकोणाकृति-मण्डलम् ।
चिन्तय तत्तले कुम्भान् चतुरः सुमनोरमान् ॥९॥

कमण्डलु के नीचे (७) गौ-खुर एवं फिर (८) सुन्दर पताका है । उसके नीचे (९) पुष्प एवं उसके नीचे (१०) वल्ली [गुल्म] का चिन्तन करना चाहिये । गो-खुर के नीचे एक (११) त्रिकोण-मण्डल है । उसके नीचे (१२) मनोहर चार कलशों का स्मरण कर ॥८—९॥

तेषां मध्ये चार्द्धचन्द्रं तले कूर्मं सुशोभनम् ।
शफरीं तत्तले रम्यां तस्याहि दक्षिणे पुनः ॥१०॥
कूर्मस्य तुल्यभागे तु निम्ने घटतलेऽपि च ।
मनोरमां पुष्पमालां स्मर वामाङ्घ्रिपङ्कजे ।
इति द्वात्रिंशच्चिह्नानि गौराङ्गस्य पदाब्जयोः ॥११॥

उन चार कलशों के बीच में (१३) अर्द्ध चन्द्रमा है, उसके नीचे (१४) कूर्म [कछुआ] सुशोभित है । उसके नीचे (१५) मछली है । मछली की दाहिनी ओर कछुए के एवं लता के समान तल भाग में (१६) मनोहर पुष्प-माला है । इस प्रकार हे मन ! श्रीमन्हाप्रभु गौराङ्ग के बायें चरणकमल में सुशोभित १६ चिह्नों का एवं दाहिने चरण में १६ चिह्नों का कुल मिलाकर बत्तीस चरण-चिह्नों का स्मरण कर ॥१०—११॥

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न

श्रीगौराङ्ग-श्रीकरयुगल चिह्न
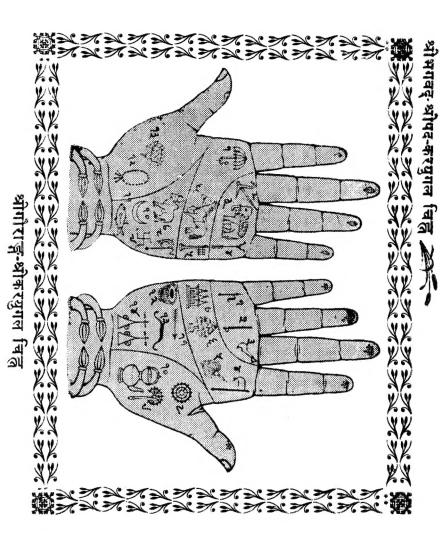
अथ रूपचिन्तामणौ—

छत्रं शक्ति—यवांकुशं पविचतुर्जम्बूफलं कुण्डलं,
वेदी-दण्ड-गदा-रथाम्बुज—चतुःस्वस्तिञ्च कोणाष्टकम् ।
शुद्धं पर्वतमूर्द्धरेखममलांगुष्ठात् कनिष्ठावधे-
र्विभ्रद्दक्षिण पादपद्ममलं शच्यात्मज-श्रीहरेः ॥१॥

श्री रूपचिन्तामणि में भी इसी प्रकार वर्णन है--

छत्र, शक्ति, यव, अंकुश, वज्र, चार जामन-फल, कुण्डल, वेदी, दण्ड, गदा, रथ, कमल, चार स्वास्तिक, अष्टकोण, शुद्ध पर्वत एवं अंगूठे से कनिष्ठा तक सुन्दर ऊर्ध्व रेखा श्री शचीतनय गौरहरि के उज्ज्वल **दाहिने चरण-कमल** में सुशोभित हो रही है ॥१॥

शङ्खाकाश-कमण्डलुं ध्वजलता-पुष्पस्त्रगर्द्धेन्दुकं,
चक्रं निर्ज्यधनुस्त्रिकोणवलया-पुष्पं चतुष्कुन्तकम् ।
मीनं गोष्पद-कूर्ममासुहृदयाङ्गुष्ठात् कनिष्ठावधे-
र्विभ्रत् सव्य-पदाम्बुजं भगवतो विश्वम्भरस्य स्मर ॥२॥

शङ्ख, आकाश, कमण्डलु, ध्वजा, लता, पुष्पमाला, अर्द्ध-चन्द्रमा, चक्र, डोरीरहित धनुष,त्रिकोण, कङ्कण, पुष्प, चार कलश, मीन, गो-खुर एवं कच्छप -इस प्रकार सुन्दर अंगूठे के मध्य से लेकर कनिष्ठा पर्यन्त भगवान् श्री विश्वम्भर गौरहरि के **बायें चरण-कमल** में सुशोभित चिह्नों का, हे मन ! स्मरण कर ॥२॥

卐

श्रीगौराङ्गमहाप्रभु-करयुगल-चिह्न

चक्रं - चाप - यवांकुश - ध्वज-पविर्भोगादि - रेखात्रयं,
प्रासादं परिघासि दुन्दुभि शरं भृङ्गारकं चामरम् ।
अंगुल्यग्रज पद्मपञ्चकतरुं लक्ष्मं करे दक्षिणे.
विभ्राणं शकटौ भजे निरुपमं शच्यात्मजं श्रीहरिम् ॥१॥

श्रीमन्महाप्रभु गौराङ्गदेव के कर-कमलों के चिह्न इस प्रकार हैं—

चक्र, धनुष, जौ, अंकुश, ध्वजा, वज्र, परमायु-सौभाग्य एवं भोग—ये तीनों रेखायें, महल, बरछी, तलवार, दुन्दुभि, बाण, भृङ्गार, चमर तथा अंगुलियों के पुरों पर पाँच कमल, श्रीवृक्ष तथा दो शकट—ये २३ अनुपम चिह्न श्रीशचीनन्दन श्रीगौरहरि के **दाहिने हाथ में** सुशोभित हैं। उनका, हे मन ! स्मरण कर ॥१॥

चन्द्रार्धं हल-षण्ड-पद्म-तुरगं यूपं झषं स्वस्तिकं,
बिभ्राणं व्यजनाङ्कितं मदकलं छत्रं स्रजं तोमरम् ।
अंगुल्यग्रजशङ्खपञ्चकयुतं भोगादि - रेखात्रयं,
लक्ष्मं सव्य-करे भजे निरुपमं शच्यात्मजं श्रीहरिम् ॥२॥

अर्द्ध-चन्द्रमा, हल, बैल, कमल, घोड़ा, स्तम्भ, मछली, स्वास्तिक, व्यजन, हाथी, छत्र, माला, तोमर, अंगुलियों के पुरों पर पांच शंख तथा परमायु-सौभाग्य-भोग—तीन रेखायें—इस प्रकार ये २१ अनुपम चिह्न श्री शचीनन्दन श्री गौरहरि के बायें हाथ में सुशोभित हैं—हे मन ! उनका स्मरण कर ॥२॥

श्रीमन्महाप्रभु करयुगल-ध्यान

दक्षिणकर-तर्जनी-मध्यमांगुली मध्यतः,
आकरभावधेरायुरेखां गौरो विभर्ति च ।
तर्जन्यंगुष्ठ - सन्धितः सौभाग्यरेखिकां तथा,
सुमणिबन्धमारभ्य वक्रगत्योत्थितान्तु ह ॥१॥

तर्जन्यंगुष्ठयोः सन्धौ सौभाग्यरेखया सह ।
भक्तभोग-प्रदानाय भोगरेखां विभर्त्ति सः ॥२॥

श्रीमन्महाप्रभु के कर-कमल-युगल का ध्यान इस प्रकार वर्णन किया गया है—

श्री महाप्रभु गौराङ्ग **दाहिने हाथ** की तर्जनी और मध्यमा अंगुली के बीच से आरम्भ होकर हथेली तक (१) परमायु-रेखा धारण करते हैं और तर्जनी और अंगूठे के सन्धि-स्थान में (२) सौभाग्य-रेखा है और कलाई

से आरम्भ होकर टेढ़ी गति से ऊपर को उठती हुई तर्जनी एवं अंगूठे के सन्धि-स्थान पर्यन्त सौभाग्य-रेखा के साथ जाकर मिलने वाली (३) भोग-रेखा वे धारण करते हैं जो भक्तजनों को समस्त भोग-सुख प्रदान करने वाली है ॥१—२॥

अंगुलीनां पुरः पंच पद्मानि धरति प्रभुः ।
अंगुष्ठस्य तले यवं चक्रं धरति तत्तले ॥३॥

भक्तदुःखाद्रि-नाशाय धत्ते वज्रञ्च तत्तले ।
वज्रस्याधः कमण्डलुं तर्जन्याश्च तले ध्वजम् ॥४॥

अंगुलियों के पुरों पर (८) पाँच पद्मों को श्री महाप्रभु धारण करते हैं। अंगूठे के नीचे (९) जौ, उसके नीचे (१०) चक्र को, फिर उसके नीचे भक्तों के दु:ख-दारिद्र्य को नाश करने के लिये वे (११) वज्र को धारण करते हैं। वज्र के नीचे (१२) कमण्डलु और तर्जनी के नीचे (१३) ध्वजा शोभित है ॥३—४॥

तत्तले चामरं धत्तेऽप्यसिश्च मध्यमातले ।
अनामिकाधः परिघं श्रीवृक्षञ्च ततः परम् ॥५॥

स्वभक्तारि-विनाशाय वाणं धरति तत्तले ।
कनिष्ठायास्तलेऽङ्कुशं प्रासादं तत्तले शुभम् ॥६॥

ध्वजा के नीचे (१४) चामर और मध्यमा के नीचे (१५) तलवार तथा अनामिका के नीचे (१६) बरछी एवं उसके नीचे (१७) सुन्दर श्रीवृक्ष विद्यमान है। उसके नीचे अपने भक्तों के शत्रुओं को विनाश करने के लिए (१८) बाण को वे धारण करते हैं। कनिष्ठा के नीचे (१९) अंकुश और उसके नीचे सुन्दर (२०) प्रासाद [महल] को वे धारण करते हैं ॥५—६॥

भक्तजय घोषणाय दुन्दुभिं धत्ते तत्तले ।
मणिबन्धोपरि प्रभूर्द्वौ शकटौ दधाति च ॥७॥

तदूर्ध्वे धनुषं धत्ते भक्तजनारि-नाशनम् ।
श्रीगौराङ्गमहाप्रभोरिति 'दक्षकरं' स्मर ॥८॥

भक्तों की जय-घोषणा के लिए प्रसाद के नीचे वे (२१) दुन्दुभि को और मणिबन्ध—कलाई के ऊपर प्रभु (२२) दो शकटों को धारण करते हैं।

उनके ऊपर भक्तजनों के शत्रुओं को नाश करने वाला (२३) धनुष है— इस प्रकार श्री गौराङ्ग महाप्रभु के २३ चिह्नों[1] युक्त **दाहिने कर-कमल** का हे मन ! स्मरण कर ॥७—८॥

'वामकरे' त्रिरेखिकां पूर्ववच्च सदा स्मर ।
अंगुलीनां पुरः पञ्च शंखान् धत्ते मनोहरान् ॥६॥

अंगुष्ठस्य तले पद्मं तत्तले मालिकां स्मर ।
छत्रञ्च तर्जनी-तले मध्यमायास्तले हलम् ॥१०॥

श्रीमन्महाप्रभु के बायें हाथ में दाहिने हाथ की तरह (३) तीन रेखाओं का तथा अंगुलियों के पोटों पर मनोहर (८) पाँच-शङ्खों का स्मरण करना चाहिये। अंगूठे के नीचे (६) कमल, उसके नीचे (१०) माला और तर्जनी के नीचे (११) छत्र तथा मध्यमा के नीचे (१२) हल का स्मरण कीजिए ॥६—१०॥

तथा चानामिकातले दधाति कुञ्जरं प्रभुः ।
कनिष्ठाधश्च तोमरं तत्तले यूपकं स्मर ॥११॥

व्यजनं तत्तले ज्ञेयं तत्तले स्वस्तिकं शुभम् ।
परमायुस्तलेऽश्वञ्च सौभाग्यस्य तले वृषम् ॥१२॥

मणिबन्धे ऋषं धत्ते तदूर्ध्वं चार्द्धचन्द्रकम् ।
श्रीगौराङ्ग महाप्रभो-र्वाम करमिति स्मर ॥१३॥

श्री महाप्रभु को अनामिका के नीचे (१३) हाथी को, कनिष्ठा के नीचे (१४) तोमर को, उसके नीचे (१५) कीर्ति-स्तम्भ को, हे मन ! स्मरण कर। उसके नीचे (१६) व्यजन और उसके नीचे (१७) शुभ स्वास्तिक है। परमायु रेखा के नीचे (१८) घोड़ा तथा सौभाग्य-रेखा के नीचे (१६) बैल है। कलाई के ऊपर (मछली) और उसके ऊपर (२१) अर्द्ध-चन्द्रमा है— इस प्रकार चिह्नों सहित श्रीमन्महाप्रभु गौराङ्ग के **बायें हाथ** का, हे मन ! सदा स्मरण कर ॥११—१३॥

१—चित्रपटों में अङ्क श्लोक-क्रम से नहीं दिये गये हैं एवं तीन रेखायें और ५ अंगुलियों के कमलों को नहीं गिनाया गया है।

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न

श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु पदयुगल चिह्न

श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु चरण-चिह्न

ध्वज-पवि-यव-जम्बुन्यम्बुजं शंखचक्रे,
हल-विशिखचतुष्कं वेदि-चापार्द्धचन्द्रान् ।
निखिल-सुखद-नित्यानन्दचन्द्रस्य दक्षे,
पदतल इति चित्राः प्रेमरेखाः स्मरामि ॥१॥
मूषल-गगन-छत्राब्जांकुशं वेदि-शक्ती,
झष-कलसचतुष्कं गोष्पदं पुष्पवल्लीम् ।
निखिल-सुखद-नित्यानन्दचन्द्रस्य सव्ये,
पदतल इति चित्राः प्रेमरेखाः स्मरामि ॥२॥

दाहिने चरण के चिह्न—

ध्वजा, वज्र, यव (जौ), जामन-फल, कमल, शङ्ख, चक्र, हल, चार-बाण, वेदी, धनुष तथा अर्द्ध चन्द्रमा—ये प्रेम-रेखायें सकलसुख-प्रदाता श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के दाहिने चरणतल में अङ्कित हैं, इनका मैं ध्यान-स्मरण करता हूं ॥१॥

मूषल, आकाश, छत्र, कमल, अंकुश, वेदी, शक्ति, मच्छली, चार-कलश, गो-खुर, पुष्प पुष्पवल्ली— ये प्रेम-रेखायें सकल सुख - प्रदाता श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के बायें चरण तल में अंकित हैं, इनका मैं ध्यान-स्मरण करता हूं ॥२॥

कौन सा चिह्न पदतल में किस स्थान पर अङ्कित है, उसका विवरण इस प्रकार है, (चित्रपट द्रष्टव्य है) --

पदचिह्न धारण-क्रम—

दक्षिण - चरणांगुष्ठमूले शंखं मनोहरम् ।
नित्यानन्दो विभर्त्ति च सर्वविद्या प्रकाशकम् ॥
चक्रं धरति तत्तले भक्त-षडविनाशनम् ।
पार्ष्णौ जम्बूफलं धत्ते तदुपर्यर्द्धचन्द्रकम् ॥
ज्याशून्यं धनुषं तथा सुविशिखचतुष्टयम् ।
तदुपरि दधाति च तदुपरि हलं स्मृतम् ॥
मध्यमायास्तले यवं पद्ममनामिका - तले ।
सर्वानर्थ-जयध्वजं तत्तले धरति प्रभुः ॥
भक्तदुखाद्रिनाशनं वज्रं धत्ते च तत्तले ।
वेदीञ्च तत्तले धत्ते तथा वामपदे स्मर ॥

श्री नित्यानन्द प्रभु पद-कर युगल चिह्न

अंगुष्ठस्य मूले वेदीं छत्रं शक्तिं क्रमात्तले ।
पार्ष्णौ मत्स्यं तदूर्द्ध्वे च कुम्भचतुष्टयं शुभम् ॥
तदुपरि च गोष्पदमाकाशं मध्यमा तले ।
अनामिका तले पद्मं तत्तले मूषलं स्मृतम् ॥
कनिष्ठायास्तलेऽङ्कुशं पुष्पञ्च तत्तले स्मर ।
वल्लीञ्च तत्तले धत्ते सुमनः सहितं तदा ।
चतुर्विंशतिश्चिह्नानि नित्यानन्द पदाम्बुजे ॥

दाहिने चरणतल में अंगूठे के मूल में मनोहर 'शंख' सुशोभित है जो श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु में समस्त विद्याओं के विद्यमान होने को प्रकाशित करता है। शंख के नीचे 'चक्र' है जो भक्तों के काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर इन छः विकारों को नाश करने वाला है। ऐड़ी में 'जामन' का फल है और उसके ऊपर 'अर्द्धचन्द्रमा' है। उसके ऊपर प्रत्यञ्चा (डोरी) से रहित 'धनुष' है और उसके ऊपर सुन्दर 'चार बाण' अंकित हैं। उनके ऊपर 'हल' का चिह्न है। मध्यमा अंगुलि के नीचे 'यव' (जौ) का चिह्न है और अनामिका अंगुलि के नीचे 'कमल' सुशोभित है। कमल के नीचे समस्त अनर्थों को नाश करने वाली 'जय-ध्वजा' को प्रभुपाद धारण करते हैं। उसके नीचे 'वज्र' है जो भक्तों के दुःख-दरिद्र को विनाश करने वाला है। वज्र के नीचे 'बेदी' का चिह्न प्रभुपाद धारण करते हैं।

अब बायें चरण में चिह्नों का ध्यान कीजिये, जो इस प्रकार हैं— अंगूठे के मूल में 'वेदी' है, उसके नीचे 'छत्र' एवं उसके नीचे 'शक्ति' सुशोभित है। एड़ी में 'मच्छली' और उसके ऊपर 'चार-कलश' हैं। कलशों के ऊपर गौ के 'खुर' का चिह्न है और मध्यमा अंगुली के नीचे 'आकाश' का चिह्न है। अनामिका अंगुली के नीचे 'कमल' और उसके नीचे 'मूषल' (गदा) सुशोभित है। कनिष्ठा अंगुली के नीचे 'अंकुश' एवं उसके नीचे 'पुष्प' का चिह्न है। उस पुष्प के नीचे 'पुष्प-लता' सुशोभित है— इस प्रकार चौबीस चिह्नों के साथ प्रभुके चरणकमलों का ध्यान-स्मरण करना चाहिये।

श्रीनित्यानन्दप्रभु करयुगल-चिह्न

व्यजनमपि गदाब्जे चामरं मार्ज्जनीञ्चा-
ङ्गुलि-मुखगतशङ्खान् वेदि-सौभाग्यरेखा ।
निखिल-सुखद-नित्यानन्दचन्द्रस्य दक्षे,
करतल इति चित्रा भक्तिपूर्वं स्मरामि ॥१॥

श्रीमन्नित्यानन्दप्रभु करयुगल चित्र
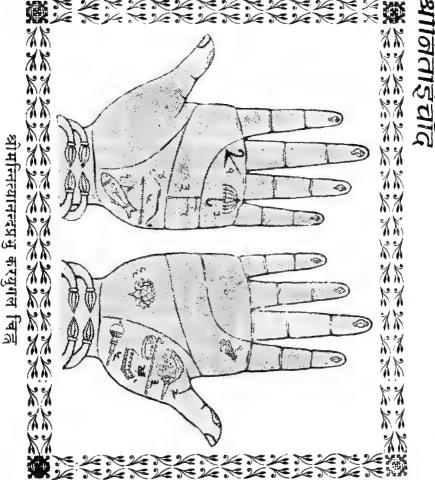
ध्वज-शर-झष-चापान् लाङ्गलम् छत्रकञ्चां-
गुलिमुखगताशङ्खान् सौभगाद्याश्च रेखाः ।
निखिल-सुखद-नित्यानन्दचन्द्रस्य सव्ये
करतल इति चित्रा भक्तिपूर्वं स्मरामि ॥२॥

दाहिने कर-चिह्न--

पङ्ख़ा, गदा, कमल, चामर, मार्जनी, अंगुलियों के पोटों पर शङ्ख, वेदी तथा सौभाग्य रेखायें—निखिल सुख-प्रदाता श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के दाहिने करतल में अङ्कित हैं, मैं इनका भक्तिपूर्वक ध्यान-स्मरण करता हूं ॥ १ ॥

ध्वजा, बाण मच्छली, धनुष, हल, छत्र एवं अंगुलियों के पोटों पर शङ्ख तथा सौभाग्य रेखायें निखिल सुख-प्रदाता श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु के बायें करतल में अङ्कित हैं, मैं इनका भक्तिपूर्वक ध्यान-स्मरण करता हूं ॥२॥

प्रत्येक चिह्न करतल पर कहाँ अङ्कित है, उसका विवरण इस प्रकार है (चित्रपट द्रष्टव्य)—

कर-चिह्न धारण क्रम—

दक्षकरे चतुर्दश चिह्नानि धरति प्रभुः ।
तेषां क्रमं प्रवक्ष्यामि भक्तानां ध्यानकारणम् ॥
दक्षकरस्य तर्जनी-मध्यमा-सन्धितः प्रभुः ।
परमायुः सुरेखिकामाकरभात् बिभर्त्ति च ॥
तथा करभपर्यन्तं तर्ज्जन्यङ्गुष्ठ सन्धितः ।
दिव्य-सौभाग्यरेखिकां नित्यानन्दो दधाति च ॥
मणिबद्धं समारभ्य वक्रभावोत्थतां तु ह ।
सौभाग्यरेखिकां तर्जन्यंगुष्ठयोस्तले स्मर ॥
भोगरेखां दधाति च स्वजन-भोग-हेतवे ।
अंगुलीनां पुरः पञ्च दराणि धरति प्रभुः ॥
मार्जनीं तर्जनी-तल अंगुष्ठाधश्च चामरम् ।
तस्याधो व्यजनं ज्ञेयं वेदीञ्च तत्तले शुभाम् ॥
तत्तले च गदां धत्ते स्वभक्तारि-प्रघातिकाम् ।
मणिबन्धोद्ध्र्व भागे च कमलं करभातले ॥

वामकरे चतुर्द्दश चिह्नानि धरति प्रभुः ।
तेषां क्रमं प्रवक्ष्यामि नतानां ध्यान-हेतवे ।।
अयं करे च पूर्ववत् सौभाग्यादि-सुरेखिकाम् ।
तथांगुल्यग्रतः पञ्च शङ्खानतिमनोहरान् ।।
मध्यमायास्तले हलमनामिका कनिष्ठयोः ।
सन्धितले च वै छत्रं तस्याधोऽधः क्रमात्तथा ।।
आमणिबन्धावधि श्रीनित्यानन्दो बिभर्त्ति च ।
ध्वजं धनुर्बाणं झषं सव्यकरमिति स्मर ।।

करचिह्न धारण-क्रम का विवरण—

श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु अपने दाहिने करतल में चौदह चिह्न धारण करते हैं, भक्तों के ध्यान करने के लिए उनका क्रम यहाँ वर्णन करता हूं — दाहिने कर की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों में जाकर मिलती हुई दीर्घ सुन्दर 'परमायु-रेखा' को प्रभु धारण करते हैं। इसी प्रकार हथेली की पीठ से लेकर तर्जनी उंगली और अंगूठे से जाकर मिलती हुई दिव्य 'सौभाग्य-रेखा' को श्रीनित्यानन्दप्रभु धारण करते हैं और कलाई से आरम्भ होती हुई टेढ़ी होकर तर्जनी अंगुली और अंगूठे के बीच जाकर मिलने वाली 'सौभाग्य-रेखा' का स्मरण करना चाहिये। भक्तजनों को समस्त सुखभोग कराने वाली 'भोग-रेखा' को भी प्रभु धारण करते हैं। पाँचों अंगुलियों के सिरों पर 'पाँच शंखों' को धारण करते हैं। तर्जनी उंगली के नीचे 'मार्जनी' को आर अंगूठे के नीचे 'चामर' को आप धारण करते हैं। चामर के नीचे 'पङ्ख' और उसके नीचे 'शुभ-वेदी' को जानना चाहिये। वेदी के नीचे 'गदा' है जिससे प्रभु अपने भक्तों के शत्रुओं का नाश करते हैं। कलाई के ऊपर हथेली के बीच में 'कमल' है।

इस प्रकार बाँये करतल मे भी प्रभु चौदह चिह्न धारण करते हैं। भक्तों के ध्यान-स्मरण के लिए उनका क्रम मैं कहता हूं—इस करतल में भी 'सौभाग्यादि' तीनों सुन्दर रेखाओं को प्रभु धारण करते हैं और पाँचों उंगलियों के पोटो पर मनोहर 'पाँच शङ्खों' को धारण करते हैं। मध्यमा उंगली के नीचे 'हल' तथा अनामिका और कनिष्ठा उंगलियों के जोड़ के नीचे 'छत्र' सुशोभित है। छत्र के नीचे कलाई पर्यन्त 'ध्वजा', 'धनुष', 'वाण' 'मच्छली'—इन चिह्नों को क्रमशः श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु धारण करते हैं।

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न

श्रीअर्हंत-श्रीपदयुगल चिह्न
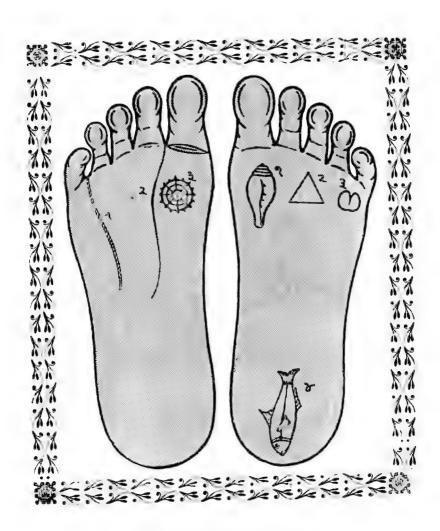
श्रीलाद्वैतप्रभु चरण-चिह्न

शङ्खं त्रिकोण-गोष्पदं झष सव्ये यवं गुणम् ।
चक्रोर्ध्वरेखिकां दक्षे स्मराद्वैत-पदे मनः ॥१॥

श्रीअद्वैताचार्य प्रभु के चरणचिह्न इस प्रकार हैं—

(१) शङ्ख, (२) त्रिकोण, (३) गो-खुर तथा (४) मछली—ये चार चिह्न **बायें चरण में** तथा (१) जौ, (२) रज्जु, (३) चक्र और (४) ऊर्ध्व-रेखा—ये चार चिह्न श्रीअद्वैताचार्य प्रभु के **दाहिने चरण** में सुशोभित हैं—हे मन ! इनका स्मरण कर ॥१॥

धारण-क्रमः—

दक्षिणचरणाङ्गुष्ठमूलेऽद्वैत प्रभुर्हरिः ।
सर्वसम्पन्नमयं धत्ते यवं स्वभक्तपोषणम् ॥१॥

भक्तपापाद्रिनाशनं चक्रं धत्ते च तत्तले ।
तर्जन्यङ्गुष्ठसन्धितो यावत् पादार्द्धमित्युत ॥२॥

वक्रगत्योत्थिताञ्चोर्ध्वरेखामसौ दधाति ह ।
कनिष्ठानामिका - सन्धिमारभ्यार्द्धपदावधेः ।
स्वभक्तचित्तबन्धाय रज्जुरेखां धरत्यसौ ॥३॥

उपर्युक्त चिह्नों का धारण-क्रम इस प्रकार है—

भगवान् श्री अद्वैताचार्य प्रभु के **दाहिने-चरण** के अंगूठे के मूल में अपने भक्तों को पोषण करने के लिए सर्वसम्पत्तिमय (१) जौ का चिह्न है। उसके नीचे भक्तजनों के पाप-पर्वत के नाश करने वाला (२) चक्र वे धारण करते हैं। तर्जनी तथा अंगुष्ठ के सन्धि-स्थान से आधे चरण तक टेढ़ी गति से जाती हुई (३) ऊर्ध्व-रेखा है, कनिष्ठा तथा अनामिका के सन्धि-स्थान से आरम्भ होकर आधे चरण तक भक्तों के चित्त को बान्धने के लिए प्रभुपाद (४) रज्जु को धारण करते हैं ॥१—३॥

तथा 'वामपदाङ्गुष्ठ-तले' विद्यामयं दरम् ।
त्रिकोणं मध्यमातले भक्तचित्त प्रमोदकम् ॥४॥

कनिष्ठायास्तले तद्वद् गोष्पदञ्च सुशोभनम् ।
पार्ष्णौ मत्स्यं विदधाति सर्वमङ्गलरूपकम् ।
श्रीलाद्वैतप्रभोरस्य पादयुग्ममिति स्मर ॥५॥

श्री प्रभु के **बायें-चरण** के अंगूठे के नीचे (१) शङ्ख है, जो सर्वविद्यामय है, मध्यमा के नीचे भक्तों के चित्त को आनन्द देने वाला (२) त्रिकोण है। कनिष्ठा के नीचे उसी प्रकार भक्तचित्तरंजन सुन्दर (३) गो-खुर हैं और एड़ी में सब प्रकार के मङ्गल को देने वाला (४) मछली का चिह्न है—इस प्रकार श्रीअद्वैताचार्य प्रभु के मनोहर आठ चिह्नों युक्त चरणकमलद्वय का स्मरण करो ॥४—५॥

श्रीलाद्वैत करयुगल-चिह्नानि

शङ्खः ध्वजः त्रिकोणकं दक्षे पद्मं तथेतरे ।
डमरूं नन्द्यावर्त्तकान् स्मराद्वैत-करे मनः ॥१॥

श्रीअद्वैताचार्य प्रभु के कर-युगल चिह्न इस प्रकार हैं—

शङ्ख, ध्वजा, त्रिकोण—ये तीन चिह्न श्री प्रभु के **दाहिने-हाथ** में सुशोभित हैं और **बायें-हाथ** में कमल, डमरू तथा नन्द्यावर्त्त वर्त्तमान हैं, हे मन ! श्रीअद्वैताचार्य के इन कर-युगल चिह्नों का स्मरण कर ॥१॥

धारण-क्रमः—

सुरम्ये दक्षिणे हस्ते चायुरादि त्रिरेखिकाम् ।
भक्तचित्तविनोदाय श्रीलाद्वैतो बिभर्त्ति च ॥१॥

अङ्गुलीनां पुरः पञ्च दराणि धरति प्रभुः ।
तर्जन्याश्च तले भाति सर्वानर्थजयध्वजः ॥२॥

कनिष्ठाधस्त्रिकोणकं ध्येयं दक्षकरे क्रमात् ।
'वामकरे' च पूर्ववदायुरादि-त्रिरेखिकाम् ॥३॥

अंगुलीनां मुखे पञ्च नन्द्यावर्त्तान् दधाति सः ।
डमरूं तर्जनीतले कमलं करभातले ॥४॥

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न
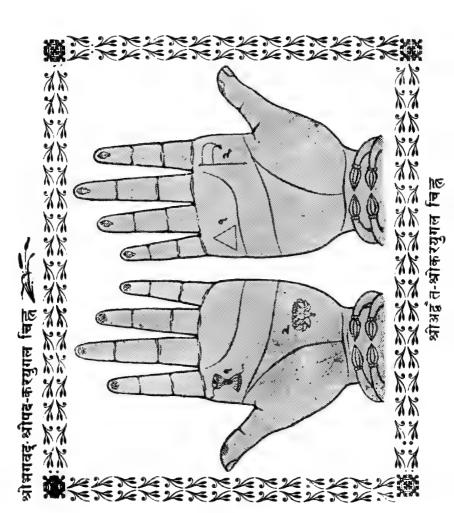
श्रीअद्वैत-श्रीकरयुगल चिह्न

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न

श्रीकृष्ण-श्रीपदयुगल चिह्न

इनके धारण का क्रम इस प्रकार है—

श्री अद्वैताचार्य प्रभु के **दाहिने-हाथ** में (१) परमायु-रेखा, (२) सौभाग्य-रेखा तथा (३) भोग-रेखा—ये तीन रेखायें हैं जिनको वे भक्तों के चित्त को आनन्दित करने के लिए धारण करते हैं। अँगुलियों के पुरों पर (८) पाँच शङ्ख वे धारण करते हैं। तर्जनी के नीचे सर्व अनर्थों को विनाश करने वाली (९) ध्वजा है और कनिष्ठा के नीचे (१०) त्रिकोण है—इस प्रकार के १० चिह्न दाहिने हाथ में ध्यान करने योग्य है। **बायें-हाथ** में दाहिने हाथ की तरह (३) तीन रेखायें हैं, अंगुलियों के पोटों पर (८) पाँच नन्द्यावर्त्त वे धारण करते हैं। तर्जनी के नीचे (९) डमरू और हथेली पर वे (१०) कमल-पुष्प धारण करते हैं ॥२—४॥

●

श्रीकृष्ण चरण-चिह्न

तथाहि रूपचिन्तामणौ—

चन्द्रार्द्धं कलसं त्रिकोणधनुषीखं गोष्पदं प्रोष्ठिकां,
शङ्खं सव्यपदेऽथ दक्षिणपदे कोणाष्टकं स्वस्तिकम् ।
चक्रं छत्र-यवांकुशं ध्वजपवी जम्बूर्ध्व - रेखाम्बुजं,
विभ्राणं हरिमूनविंशति-महालक्ष्मार्चिताँघ्रि भजे ॥१॥

भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-कमलों के चिह्न-समूह श्रीरूपचिन्तामणि में इस प्रकार वर्णित हैं—

अर्द्ध चन्द्रमा, कलस, त्रिकोण, धनुष, आकाश, गो-खुर, मछली और शङ्ख—ये आठ चिह्न **बायें-चरण** में शोभित हैं।

दक्षिण-चरण में—अष्टकोण, स्वस्तिक, चक्र, छत्र, यव, अंकुश, ध्वजा, वज्र, जम्बूफल, ऊर्ध्व-रेखा, कमल—ये ग्यारह चिह्न हैं। इस प्रकार दोनों चरण-कमलों में कुल मिलाकर उन्नीस चिह्न श्रीमहालक्ष्मी अर्थात् श्री राधाजी द्वारा पूजित श्रीकृष्ण-चरणों में सुशोभित हैं, जिनका मैं ध्यान करता हूं ॥१॥

धारण-क्रमः—

अथाङ्गुष्ठमूले यवार्यातपत्रं तनुं तर्जनीसन्धिभागूर्ध्वरेखाम् ।
पदार्द्धावधिं कुञ्चितां मध्यमाधोऽम्बुजं तत्तलस्थं ध्वजं सत्पताकम् ।।
कनिष्ठातले त्वङ्कुशं वज्रमेषां तले स्वस्तिकानां चतुष्कं चतुर्भिः ।
युतं जम्बुभिर्मध्यभाताष्टकोणं मनो रे स्मर श्रीहरेर्दक्षिणाङ्घ्रौ ।।
विषन्मध्यमाधः स्मराङ्गुष्ठमूले दरं तद्द्वयाधो धुनर्ज्याविहीनम् ।
ततो गोष्पदं तत्तले तु त्रिकोणं चतुष्कुम्भमर्द्धेन्दुमीनौ च 'वामे' ।।२।।

उपर्युक्त चिह्नों का धारण-क्रम इस प्रकार है—

दाहिने-चरण में अंगूठे के मूल में (१) 'यव'—जौ है, उसके नीचे (२) 'चक्र' है, तर्जनी और अंगूठे के सन्धि-स्थान से लेकर आधे चरण तक लम्बाईमें (३) 'ऊर्ध्व-रेखा' शोभित है। मध्यमा-अंगुली के नीचे (४) 'कमल', उसके नीचे (५) 'ध्वजा' तथा (६) सुन्दर 'छत्र' है। कनिष्ठा अंगुली के नीचे (७) 'अंकुश', उसके नीचे (८) 'वज्र' है। फिर नीचे (९) 'चार स्वस्तिकों' के साथ (१०) चार 'जामन-फल' अङ्कित हैं तथा उनके बीच (११) 'अष्टकोण' सुशोभित है। हे मन! इस प्रकार श्रीकृष्ण के **दाहिने-चरण** का तू ध्यान कर ।।२।।

卐

ध्वजादि धारणस्थान एवं प्रयोजन

दक्षिणस्य पदांगुष्ठमूले चक्रं विभर्त्यजः ।
तत्रभक्तजनस्यारि - षड्वर्ग - च्छेदनायः सः ।।१।।

मध्यमांगुलिमूले च धत्ते कमलमच्युतः ।
ध्यातृचित्तद्विरेफाणां लोभनायति शोभनम् ।।२।।

श्रीस्कन्दपुराण मे उपर्युक्त ध्वजादि-चिह्नों के तत्तत्स्थानों में धारण करने के प्रयोजन का इस प्रकार उल्लेख है—

श्रीकृष्ण **दाहिने-चरण** के अंगूठे के मूल में चक्र धारण करते हैं, वह भक्तों के छः प्रकार के—काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह एवं मत्सर शत्रुओं का

छेदन करने के लिए हैं। मध्यमा-अंगुली के मूल में जो शोभनीय कमल है, वह ध्यान करने वाले भक्तरूपी मधुकरों को लालायित करने के लिए है ॥१—२॥

पद्मस्याधो ध्वजं धत्ते सर्वानर्थजयध्वम् ।
कनिष्ठामूलतो वज्रं भक्तपापाद्रि भेदनम् ॥३॥

पार्ष्णिमध्येऽङ्कुशं भक्तचित्तेभवशकारिणम् ।
भोगसम्पन्मय धत्ते यवमङ्गुष्ठपर्वणि ॥४॥

कमल के नीचे जयध्वजा को भक्तों के सर्वानर्थों को नाश करने के लिए तथा कनिष्ठा अंगुली के मूल में वज्र को भक्तों के पापरूपी पर्वत को छेदन करने के लिए श्रीकृष्ण धारण करते हैं। पार्ष्णि-अंगुली के मध्य में वे अंकुश को भक्तों के चित्त को वश करने के लिये तथा अंगूठे के नीचे जौ—को भक्तों को सब प्रकार के भोग-सम्पन्न करने के लिए श्रीकृष्ण धारण करते हैं ॥३—४॥

तदेवं चक्र-ध्वज-कमल-वज्राङ्कुशयवा इति षट् चिह्नानि श्रीकृष्णस्य दक्षिणे चरणेऽन्यान्यपि चिह्नानि श्रीवैष्णवतोषणी दृष्ट्या लिख्यन्ते—

अङ्गुष्ठतर्जनीसन्धिमारभ्य यावदर्द्धचरणमूर्ध्वरेखा, चक्रस्यतले छत्रम, अर्द्धचरणतले चतुर्दिगवस्थितं स्वस्तिक चतुष्टयं, स्वस्तिकमध्ये अष्टकोण-मित्येकादश चिह्नानि ॥५॥

इस प्रकार उक्त श्लोकों में चक्र, ध्वज, कमल, वज्र एवं अंकुश—इन छः चिह्नों का वर्णन श्रीकृष्ण के दाहिने-चरण में किया गया है। अन्यान्य अर्थात् बाकी के पाँच चिह्नों का श्रीवैष्णवतोषणी के मतानुकूल इस प्रकार उल्लेख है—

अंगूठे और तर्जनी के सन्धिस्थान से आरम्भ होकर आधे चरण तक ऊर्ध्वरेखा, उसक एक ओर चक्र, उसके नीचे छत्र है। नीचे आधे चरण में चारों दिशाओं में चार स्वस्तिक हैं और स्वस्तिकों के बीच अष्टकोण है—इस प्रकार कुल ग्यारह चिह्न श्रीकृष्ण के **दाहिने-चरणकमल** में सुशोभित हैं ॥ ५ ॥

अथ वाम—पदाङ्गुष्ठमूलतस्तन्मुखे दरम् ।
सर्वविद्या - प्रकाशाय दधाति भगवानसौ ॥६॥

बायें-चरण के अंगूठे के मूल में उसकी ओर ऊपर मुख किये हुए (१) शङ्ख है, जिसे श्री भगवान् समस्त विद्याओं को प्रकाशित करने के लिए धारण कर रहे हैं ।।६।।

मध्यमामूलेऽम्बरमन्तर्वाह्यमण्डलद्वयात्मकं,तदधः कार्मुकं विगतज्यम्. तदध्ये गोष्पदं, तत्तले त्रिकोणं, तदभितः कलसानां चतुष्टयं क्वचित् त्रितयञ्च दृष्टं त्रिकोणतलेऽर्द्धचन्द्रोऽग्रभागद्वयस्पृष्ट त्रिकोणद्वयं, तदधो मत्स्यम्—इत्यष्टौ मिलित्वा उनविंशतिः चिह्नानि । श्रीमद्भागवते श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तिटीकादृष्ट्या लिखितम्—इति ।।७।।

मध्यमा के मूल में भीतर और बाहर दो मण्डलात्मक (२) आकाश का चिह्न है, उसके नीचे (३) प्रत्यञ्चा रहित धनुष है, उसके नीचे (४) गोखुर है । उसके नीचे (५) त्रिकोण, उसके चारों तरफ (६) चार कलस हैं, किन्हीं भक्तों द्वारा तीन भी देखे गये हैं, त्रिकोण के नीचे (७) अर्द्ध-चन्द्रमा है जिसके दो सिरे त्रिकोण के दो सिरों का स्पर्श कर रहे हैं । उस चन्द्र के नीचे (८) मछली का चिह्न है—इस प्रकार ये आठ चिह्न हैं । दाहिने चरण के ११ चिह्न और बायें चरण के ८ चिह्न मिलाकरके कुल **उन्नीस-चिह्न** श्रीकृष्ण के चरण-कमलों में सुशोभित हैं—श्रीमद्भागवत की श्रीविश्नाथ चक्रवर्ती विरचित टीका के मतानुसार ऐसा उल्लेख है ।।७।।

तथाहि श्रीगोविन्दलीलामृते—

चक्रार्द्धेन्दु-यवाष्टकोण-कलशैश्छत्र त्रिकोणाम्बरैश्चाप-
स्वस्तिक-वज्र-गोष्पद - दरैर्मीनोर्द्ध्वरेखाङ्कुशैः ।
अम्भोज-ध्वज - पक्वजाम्बवफलैः सल्लक्षणैरङ्कितं,
जीयाच्छ्री पुरुषोत्तमत्वगमकं श्रीकृष्णपादद्वयम् ।।८।।

इसी प्रकार श्रीगोविन्दलीलामृत में भी वर्णन किया गया है—

चक्र, अर्द्ध-चन्द्रमा, यव, अष्टकोण, कलश, छत्र, त्रिकोण, आकाश, धनुष, स्वस्तिक, वज्र, गो-खुर, शङ्ख, मीन, ऊर्ध्व-रेखा, अंकुश, कमल, ध्वज, पके जामन-फल—इन उन्नीस सत्-लक्षणमय चिह्नों द्वारा अङ्कित श्रीपुरुषोत्तमत्व के ज्ञापन करने वाले श्रीकृष्णचन्द्र के युगल-चरणों की सदा जय हो ।।८।।

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न

श्रीकृष्ण-श्रीकरयुगल चिह्न
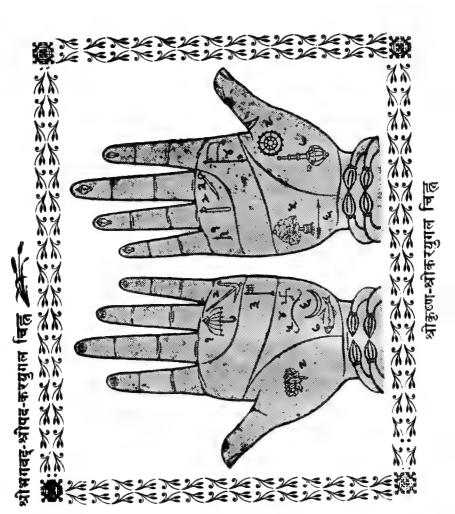
श्रीकृष्णकरयुगलध्यान-क्रमः

दक्षकरस्य तर्जनी-मध्यमासन्धिमूलतः ।
करभावधितः परमायुरेखां धरत्यजः ॥१॥
तथा करभ-पर्यन्तं तर्जन्यङ्गुष्ठ सन्धितः ।
सौभाग्यरेखिकामन्यां बिभर्त्यातिमनोहराम् ॥२॥

भगवान् श्रीकृष्ण के कर-कमलों का ध्यान-क्रम इस प्रकार है—

दाहिने-हाथ में तर्जनी एवं मध्यमा अंगुलियों के सन्धि मूल से हथेली पर्यन्त (१) परमायु-रेखा श्रीकृष्ण धारण करते हैं। तर्जनी तथा अंगूठे की सन्धि से लेकर हथेली पर्यन्त अति मनोहर (२) सौभाग्य-रेखा सुशोभित है ॥१—२॥

सुमरिनबन्धमारभ्य वक्रगत्योत्थिता शुभा ।
तर्जन्यङ्गुष्ठसन्धौ च सौभाग्यरेखया सह ॥३॥
मिलित्वा वर्त्तते तु या सा भोगरेखिका मता ।
अंगुलीनां पुरः पञ्च शङ्खानसौ विभर्त्ति च ॥४॥

कलाई से आरम्भ होकर टेढ़े रूप में ऊपर को जाकर जो तर्जनी एवं अंगूठे के सन्धि-स्थान पर सौभाग्य रेखा से जाकर मिलती है, वह शुभ (३) भोग-रेखा है। पाँचों अंगुलियों के पुरों पर (८) पाँच शङ्खों को श्रीभगवान् धारण करते हैं ॥३—४॥

अंगुष्ठाधो यवं धत्ते चक्रं धत्ते च तत्तले ।
चक्रस्याधो गदां धत्ते तर्जन्याश्च तले ध्वजम् ॥५॥
मध्यमाया-स्तलेऽसिः स्यात् परिघोऽनामिकातले।
कनिष्ठायास्तलेऽङ्कुशं भक्तारीभ प्रशमनम् ॥६॥
सौभाग्यरेखिका-तले श्रीवृक्षञ्चाति शोभनम् ।
भक्तषड़रि-नाशनं वाणं धत्ते च तत्तले ॥७॥

अंगूठे के नीचे (६) जौ, उसके नीचे (१०) चक्र और चक्र के नीचे (११) गदा तथा तर्जनी अंगुली के नीचे वे (१२) ध्वजा को धारण करते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे (१३) तलवार तथा अनामिका के नीचे (१४)

परिघ [बरछी] है। कनिष्ठा के नीचे (१५) अंकुश को धारण करते हैं जो भक्तजनों के शत्रुओं को प्रशमन करने वाला है। सौभाग्य-रेखा के नीचे (१७) श्रीकल्पवृक्ष शोभित है एवं उसके नीचे काम-क्रोधादि छः शत्रुओं को नाश करने वाला (१७) बाण धारण करते हैं श्रीकृष्ण ॥५—७॥*

अथ वामकरे चायुरादिरेखात्रयं शुभम् ।
अंगुलीनां पुरोधत्ते नन्द्यावर्त्तान्तु पञ्चकान् ॥८॥

अथांगुष्ठतले धत्ते कमलं चित्तमोहनम् ।
अनामिका-तले छत्रं भक्तत्रितापनाशनम् ॥९॥

बायें-हाथ में भी (१) परमायु-रेखा, (२) सौभाग्य-रेखा एवं (३) भोग-रेखा—ये तीनों शुभ रेखायें हैं, पाँचों अंगुलियों के पुरों में (८) पाँच-नन्द्यावर्त्त श्रीभगवान् धारण करते हैं। अंगूठे के नीचे चित्त-मोहनकारी (९) कमल है तथा अनामिका के नीचे भक्तजनों के त्रितापों को नाश करने वाला (१०) छत्र सुशोभित है ॥८—९॥

कनिष्ठातलतश्चैव मणिबन्धावधि क्रमात् ।
हलं धत्ते च यूपकं तथैव स्वस्तिकं शुभम् ॥१०॥

ज्याशून्यधनुकं ततः तत्तले चार्द्धचन्द्रकम् ।
तत्तले च झषं धत्ते सव्यकरमिति स्मर ॥११॥

कनिष्ठा अंगुली से लेकर कलाई तक एक दूसरे के नीचे क्रमशः श्रीकृष्ण (११) हल, (१२) यूप अर्थात् विजयात्मक कीर्ति स्तम्भ फिर (१३) मङ्गलरूप स्वस्तिक को धारण करते हैं। उसके बाद (१४) प्रत्यञ्चा रहित धनुष और उसके नीचे (१५) अर्द्ध-चन्द्रमा है। उसके नीचे (१६) मच्छली का चिह्न श्रीकृष्ण धारण करते हैं—इस प्रकार उनके **दाहिने हाथ** चे चिह्नों का स्मरण करना चाहिये ॥१०—११॥

*** दाहिने कर के चित्र में अंगुलियों के पाँच शङ्खों तथा तीन रेखाओं पर गणना-अङ्क नहीं दिये गये हैं, अतः केवल ९ तक के अङ्क दीखते हैं। इस प्रकार आगे सब चित्रों में ज्ञातव्य है।**

श्रीभगवद्-श्रीपद-करयुगल चिह्न

श्रीराधा-श्रीपदयुगल चिह्न

श्रीगोविन्दलीलामृते—

शङ्खार्द्धेन्दुयवांकुशैररिगदाच्छत्रध्वज-स्वस्तिकै
र्यूपाब्जात्यि-हलैर्धनुः परिघकैः श्रीवृक्षमीनेषुभिः।
नन्द्यावर्त्तचयैस्तथांगुलिगतैरेतैर्निजैलक्षणैर्भ्रातः,
श्रीपुरुषोत्तमत्वगमकैः पाणौ हरेरङ्कितौ ॥१॥

श्रीगोविन्दलीलामृत में भी इसी प्रकार वर्णन है—

शङ्ख, अर्द्ध-चन्द्र, यव, अंकुश, गदा, छत्र, ध्वजा, स्वस्तिक, यूप, कमल, तलवार, हल, धनुष, बरछी, कल्पवृक्ष, मछली, नन्द्यावर्त्तादि चिह्न श्रीकृष्ण के कर-कमलों में श्रीपुरुषोत्तमत्व के लक्षणों को प्रकाशित करते हुए अङ्कित हैं ॥१॥

श्रीश्रीराधिका चरण-चिह्न

छत्रारि-ध्वज-वल्लि-पुष्प-वलयान् पद्मोर्ध्व रेखांकुशान्,
अर्द्धेन्दुञ्च यवञ्च वाममनु या शक्ति गदा स्यन्दनम् ।
वेदी-कुण्डल-मत्स्य-पर्वत-दरं धत्तेऽन्वसव्यं पदं,
तां राधां चिरमूनविंशति-महालक्ष्मार्चिताङ्घ्रि भजे ॥१॥

—रूपचिन्तामणौ※

श्रीरूपचिन्तामणि※ में श्रीराधिकाजी के चरण - चिह्नों का इस प्रकार उल्लेख है—

छत्र, चक्र, ध्वजा, पुष्प-वल्ली, कङ्कन, कमल, ऊर्ध्व-रेखा, अंकुश, अर्द्ध-चन्द्र एवं यव—ये (११) चिह्न **वाम-चरण** में विराजते हैं। शक्ति, गदा, रथ, वेदी, कुण्डल, मछली, पर्वत एवं शङ्ख—ये आठ चिह्न श्रीराधिकाजी के **दाहिने-चरण** में अङ्कित हैं—ऐसे **उन्नीस-महालक्षणों** युक्त श्रीराधाजी के चरण-कमलों का मैं भजन करता हूं ॥१॥

※ श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ति-विरचित ग्रन्थ ।

धारण-क्रमः—

अरे मनश्चिन्तय राधिकाया वामे पदेऽङ्गुष्ठतले यवारी ।
प्रदेशिनी - सन्धिभागूर्द्ध्वरेखामाकुञ्चितामाचरणार्द्धमेव ॥१॥
मध्यातलेऽब्जध्वजपुष्पवल्लीः कनिष्ठकाधोऽङ्कुशमेकमेव ।
चक्रस्य मूले वलयातपत्रे पार्ष्णौ तु चन्द्रार्द्धमथान्यपादे ॥२॥

इन चिह्नों का धारण-क्रम इस प्रकार है—

अरे मन ! श्रीराधिकाजी के **बायें चरण** में अंगूठे के नीचे (१) जौ तथा (२) चक्र का स्मरण कर। प्रदेशिनी अंगुली के सन्धि भाग से लेकर आधे चरण तक पतली होती गई (३) रेखा सुशोभित है। मध्यमा अंगुली के नीचे (४) कमल, (५) ध्वजा, (६) पुष्प एवं (७) बल्ली [गुल्म] है। कनिष्ठा अंगुली के नीचे (८) अंकुश है। चक्र के नीचे (९) छात्ता, उसके नीचे (१०) कङ्कन तथा एड़ी में (११) अर्द्ध-चन्द्रमा सुशोभित है ॥१—२॥

पार्ष्णौ झषं स्यन्दनशैलमूर्ध्वे, तत्पार्श्वयोः शक्तिगदे च शङ्खम् ।
अंगुष्ठमूलेऽथ कनिष्ठकाधो वेदीमधः कुण्डलमेव तस्याः ॥३॥

दाहिने-चरण की एड़ी में (१) मछली, उसके ऊपर (२) रथ है उसके ऊपर (३) पर्वत है। रथके पार्श्व में एक ओर (४) शक्ति है तथा दूसरी ओर (५) गदा है और ऊपर (६) शङ्ख है अंगूठे के मूल में। कनिष्ठा अंगुली के नीचे (७) वेदी है तथा उसके नीचे (८) कुण्डल सुशोभित हो रहा है ॥३॥

यथा आनन्दचन्द्रिकायाम्—

अथ वामचरणस्य अंगुष्ठमूले यवः, तत्तले चक्रं, तत्तले छत्रं, तत्तले वलयं, तर्जन्यङ्गुष्ठसन्धिमारभ्य वक्रगतया यावदर्द्ध चरण मूर्ध्वरेखा, मध्यमातले कमलं, कमलतले ध्वजः सपताकः, कनिष्ठातलेऽङ्कुशः, पार्ष्णौ अर्द्धचन्द्रः, तदुपरि वल्लीपुष्पञ्च इत्येकादश ॥४॥

आनन्दचन्द्रिका* में इस प्रकार उल्लेख है—

श्रीराधाजी के **वाम-चरण** के अंगूठे के नीचे जौ है, उसके नीचे चक्र,

---

* श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती कृत श्रीउज्ज्वलनीलमणि की टीका का नाम ही आनन्दचन्द्रिका है।
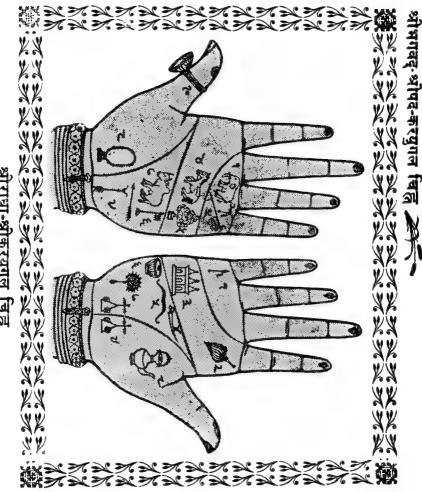
श्रीराधा-श्रीकरयुगल चिह्न

उसके नीचे छत्र, उसके नीचे कङ्कन है, तर्जनी एवं अंगूठे के सन्धि-स्थान से आरम्भ होकर टेढ़ी गति से आधे चरण तक रेखा है। मध्यमा के नीचे कमल, उसके नीचे ध्वजा है। कनिष्ठा के नीचे अंकुश है। एड़ी में अर्द्ध-चन्द्रमा, उसके ऊपर वल्ली और पुष्प है—इस प्रकार ग्यारह चिह्न **वाम-चरण** में हैं ॥४॥

अथ दक्षिणस्य अंगुष्ठमूले शङ्खः, कनिष्ठातले वेदी, तत्तले कुण्डलं, तर्जनीमध्यमयोस्तले पर्वतः, पार्ष्णौ मत्स्यः, मत्स्योपरि रथः, रथस्य पार्श्वद्वये शक्ति-गदे इत्यष्टौ मिलित्वा उनविंशतिः ॥५॥

श्रीराधा के **दक्षिण-चरण** के अंगूठे के मूल में शङ्ख है। कनिष्ठा के नीचे वेदी, उसके नीचे कुण्डल है। तर्जनी एवं मध्यमा के नीचे पर्वत है। एड़ी में मछली आदि उसके ऊपर रथ है। रथ के दोनों पार्श्व में शक्ति, और गदा है—इस प्रकार ये आठ चिह्न हैं। इनके साथ दाहिने-चरण के ११ चिह्न मिलकर कुल उन्नीस चिह्न हैं श्रीराधाजी के दोनों चरण-कमलों में जो नित्य-स्मरणीय हैं ॥५॥

श्रीराधिका करयुगल-ध्यानम्

कोदण्डांकुश-भेर्यनोद्वय-पवि-प्रासाद-भृङ्गारकै-
रायुर्भाग्यसुखप्रदैः सुमधुरै रेखात्रयैरङ्कितम्।
अंगुल्यग्रज-शङ्खपञ्चकयुतं श्रीचामरास्यन्वितं,
राधादक्षिणहस्तकं निरुपमं लक्ष्मैः शुभैर्द्योत्यते ॥१॥

श्रीराधिकाजी के कर-कमलों का ध्यान इस प्रकार वर्णित है—

(१) धनुष, (२) अंकुश, (३) भेरी, (४) दो-शकट, (५) बरछी, (६) महल, (७) गङ्गासागर, (८) आयु-रेखा, (९) सौभाग्य-रेखा, (१०) सुखप्रद—भोग-रेखा तथा अंगुलियों के पुरों पर (१५) पांच शङ्ख, (१६) चामर तथा (१७) तलवार इन सत्रह अनुपम शुभ चिह्नों से श्रीराधाजी का **दाहिना-हाथ** विभूषित हो रहा है ॥१॥

मालातोमर-पादपांकुशयुतं हस्त्यश्व-गो-भ्राजितं,
नन्द्यावर्त्तचयाङ्कितांगुलियुतं राधाकरं वामकम् ।
आयुर्भाग्य-सुखप्रदैः परिततैः रेखा-त्रयैरङ्कितं
यूपेषु व्यजनाङ्कितं निरुपमं लक्ष्मैः शुभैरज्यते ।।२।।

(१) माला, (२) तोमर, (३) वृक्ष, (४) अंकुश, (५) हाथी, (६) घोड़ा एवं (७) वृषभ तथा पाँचों अंगुलियों पर (१२) पाँच नन्द्यावर्त्तों से श्रीराधाजी का **बाँया-हाथ** सुशोभित है। (१३) आयु-रेखा, (१४) भाग्य-रेखा एवं (१५) सुखभोगप्रद-रेखा—इन तीनों से अङ्कित है तथा (१६) कीर्ति-स्तम्भ, (१७) व्यजन एवं (१८) बाण—इन अठारह अनुपम शुभ-चिह्नों से श्रीराधाजी का **वाम-कर** सुशोभित हो रहा है ।।२।।

धारण-क्रमः—

श्रीकृष्णस्य करस्येव या रेखाः सौभगादयः ।
तास्तिस्रो राधिका धत्ते स्ववामकर-पङ्कजे ।।१।।

तदंगुलिपुटा भ्रान्ति नन्द्यावर्त्तक-पञ्चभिः ।
अधोऽङ्कुशः कनिष्ठायास्तत्तले व्यजनं स्मृतम्।।२।।

श्रीराधाजी के श्रीकरयुगल चिह्नों का धारण-क्रम इस प्रकार है—

श्रीराधा अपने **बायेंकर-कमल** में श्रीकृष्ण-कर की तरह (१) सौभाग्य रेखा, (२) परमायु-रेखा एवं (३) भोग-रेखा—ये तीन रेखायें धारण करती हैं। इनकी पाँचों अंगुलियों के पुरों पर (८) पाँच नन्द्यावर्त्त शोभित हैं। कनिष्ठा के नीचे (६) अंकुश और उसके नीचे (१०) व्यजन विद्यमान हैं ।। १—२ ।।

श्रीवृक्षस्तत्तले भाति ततो यूपं स्मरेत् सदा ।
वाणश्च तत्तले शोभी तोमरश्च ततः परम् ।।३।।

राजते तत्तले मालाऽनामिकातश्च कुञ्जरः ।
परमायुस्तले चाश्वः सौभाग्याधो वृषः स्मृतः ।।४।।

व्यजन के नीचे (११) वृक्ष, उसके नीचे (१२) कीर्ति-स्तम्भ, उसके नीचे (१३) बाण और उसके नीचे मनोहर (१४) तोमर का सदा स्मरण

करना चाहिये, उसके नीचे (१५) माला है। अनामिका के नीचे (१६) हाथी और परमायु रेखा के नीचे (१७) घोड़ा है तथा सौभाग्य-रेखा के नीचे (१८) बैल का ध्यान करना चाहिये ॥३—४॥

दक्षिणकरे च राजन्ते ताः परमायुरादयः ।
पचांगुलीषु शङ्खास्तु स्मर्त्तव्या हि सुखार्थिना ॥५॥

अंगुष्ठाधश्च भृङ्गारश्चामरस्तर्जनी - तले ।
अंकुशश्च कनिष्ठायाः प्रासादस्तत्तले स्मृतः ॥६॥

श्रीराधाजी के **दाहिने-हाथ** में भी (१) परमायु-रेखा, (२) सौभाग्य-रेखा एवं (३) भोग-रेखा—ये तीनों वर्त्तमान हैं और सेवा सुख चाहने वाले भक्तजनों को उनकी पाँचों अंगुलियों के पुरों पर (८) पाँच शङ्खों का स्मरण करना चाहिये। अंगूठे के नीचे (६) भृङ्गार और तर्जनी के नीचे (१०) चामर, कनिष्ठा के नीचे (११) अंकुश और उसके नीचे (१२) महल का स्मरण करना चाहिये ॥५—६॥

तदधो दुन्दभिः रव्यातस्ततो वज्रं स्मृतं शुभम्।
ऊर्ध्वञ्च मणिबन्धस्य शकटौ कथितौ शुभौ ॥७॥

तदूर्ध्वञ्च धनुश्चिह्नमसिचिह्नं ततः परम् ।
श्रीराधाकरचिह्नानि स्मरेत् मनो निरन्तरम् ॥८॥

महल के नीचे (१३) दुन्दुभि, उसके नीचे शुभ (१४) वज्र सुशोभित है। कलाई के ऊपर (१५) दो मङ्गल शकट अङ्कित हैं। उनके ऊपर (१६) धनुष का एवं (१७) तलवार का चिह्न है—इस प्रकार श्रीराधाजी के कर-कमल चिह्नों का मन में निरन्तर स्मरण करना चाहिये ॥७—८॥

यथा आनन्दचन्द्रिकायाम्—

वामकरस्य तर्जनी-मध्यमयोः सन्धिमारभ्य कनिष्ठाधस्तले करभभागे गता परमायुरेखा, तत्तले करभमारभ्य तर्जन्यङ्गुष्ठयोर्मध्यभागं गतान्या, अङ्गुष्ठाधो मणिबन्धत उत्थिता वक्रगतया मध्यरेखां मिलित्वा तर्जन्यङ्गुष्ठयोर्मध्य-भागं गतान्या, तथान्या युक्त्या विभज्य दर्श्यन्ते—अङ्गुलीनामग्रतो नन्द्यावर्त्ताः पञ्च, अनामिका-तले कुञ्जरः, परमायुरेखातले वाजी, मध्यरेखा-तले वृषः, कनिष्ठातलेऽङ्कुशः, व्यजन-श्रीवृक्ष-यूप-बाण-तोमरमाला यथा शोभमित्यष्टादश ॥१॥

श्रीआनन्दचन्द्रिका में भी इसी प्रकार इन चिह्नों का वर्णन किया गया है—

श्रीराधाजी के **बायें-हाथ** की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों के सन्धि स्थान से लेकर कनिष्ठा के नीचे होती हुई हथेली तक (१) परमायु-रेखा है। उसके नीचे हथेली से आरम्भ होकर तर्जनी और अंगूठे के मध्य-स्थान तक दूसरी (२) सौभाग्य-रेखा गई है। कलाई से टेढ़े रूप में उठी हुई तीसरी (३) भोग-रेखा अंगूठे के नीचे तर्जनी और अंगूठे के मध्य भाग में उक्त सौभाग्य-रेखा से आ मिली है, जो दोनों को विभक्त करती हुई दीखती है। अंगुलियों के अग्रभागों पर (८) पाँच नन्द्यावर्त्त विद्यमान हैं। अनामिका के नीचे (९) हाथी है। परमायु-रेखा के नीचे (१०) घोड़ा तथा मध्य-रेखा के नीचे (११) बैल है। कनिष्ठा के नीचे (१२) अंकुश, (१३) व्यजन, (१४) श्रीवृक्ष, (१५) कीर्ति-स्तम्भ, (१६) बाण, (१७) तोमर तथा (१८) माला—इस प्रकार १८ चिह्न श्रीराधाजी के **बायें-हाथ** में सुशोभित हो रहे हैं ॥१॥

अथ दक्षिण-करस्य पूर्वोक्तं परमायुरेखादित्रयमत्रापि ज्ञेयम् । अङ्गुलीनामग्रतः शङ्खाः पञ्च । तर्जनी-तले चामरम्, अत्रापि कनिष्ठातले-ऽङ्कुश-प्रासाद-दुन्दुभि-वज्र-शकटयुग-कोदण्डासि-भृङ्गारा यथाशोभं ज्ञेया इति मिलित्वा पञ्चत्रिंशत् ॥२॥

दाहिने-हाथ में पूर्वोक्त (३) परमायु आदि रेखायें जाननी चाहिये और अंगुलियों के अग्रभागों पर (८) पाँच शङ्ख शोभित हैं। तर्जनी के नीचे (९) चामर, कनिष्ठा के नीचे (१०) अंकुश, (११) महल, (१२) दुन्दुभि, (१३) वज्र, (१४) दो शकट, (१५) धनुष, (१६) तलवार तथा (१७) भृङ्गार—इन १७ चिह्नों की शोभा है। इस प्रकार दोनों हाथों में मिलाकर कुल ३५ चिह्न हैं—जिनका स्मरण करना चाहिये ॥२॥

अनमोल भक्तिरत्न

★

(१) श्रीमाधुर्यकादम्बिनी—

(श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती विरचित) सरस एवं सरल विश्व भाषा, टीका सहित ।

(२) श्रीभक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दुः—

(श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती विरचित) सरस एवं सरल विश्व भाषा टीका सहित ।

(३) श्रीभक्तमाल—

श्रीनाभाजीकृत मूल (पाठार्थ)
विस्तृत व्याख्या टीका सहित [२ भाग]

(४) अष्टसखा भक्तमाल—

अष्टछाप के भक्तकवि सर्वश्री कुम्भनदास, सूरदास, कृष्णदास, नन्ददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी एवं गो के चरित्र एवं पदों का संग्रह ।

(५) शिक्षामृत तरंगिणी—

यह एक शिक्षाप्रद मुक्तक काव्य है। विभिन्न बिन्दुओं लेकर रुचिकर रचना की गई है ।

(६) गौरांग लीला—

महाप्रभु की विभिन्न लीलाओं का संक्षिप्त संग्रह ।

(७) Prema-Bhakti [English]

श्री हरिनाम प्रकाशन
बाग बुन्देला, वृन्दावन